



What is Arya Samaj?

Arya Samaj founded by Maharishi Dayanand Saraswati is an institution based on the teachings of Vedas for the welfare of universe. It propagates the universal doctrines of humanity. It is neither a religion nor a sect.

ARYAN VOICE

YEAR 40

03/2018-19

MONTHLY

March 2018

MOVING TO A NEW HOME

Arya Samaj (Vedic Mission) West Midlands
Will be moving to our new home in the last week of March 2018.

New Address

321 Rookery Road, Handsworth, Birmingham, B21 9PR.

First congregation at new home on Sunday 1st April 2018

DONATIONS

Those of you who would like to donate money to "Arya Samaj (Vedic Mission) West Midlands" New building fund please do so now!!! Your help will be highly appreciated.

(Charity Registration No. 1156785)

Tel: 0121 359 7727

PLEASE NOTE: phone number only active until 31.03.2018

E-mail- enquiries@arya-samaj.org Website: www.arya-samaj.org

Now on facebook - <https://www.facebook.com/aryasamajwestmidlands/>

CONTENTS

10 Principles of Arya Samaj	3
Meditation is Churning	By Mr Krishan Chopra 4
योग विद्या-४	आचार्य डॉ. उमेश यादव 6
५. गाओ मोरे मनवा, प्रभु जी का गीत रे	10
Sanyaas Sacrament (15th Sanskar)	11
Matrimonial Service	15
List of Festivals for year 2018	16
News (पारिवारिक समाचार)	17
New Building Refurbishment Fund	20
Arya Samaj West Midlands New Home	23
Letter of Appeal for Donations to Arya Samaj West Midlands	24
Dates for your Diary	26

**For General and Matrimonial Enquiries
Please Ring**

Miss Raji (Rajashree) Chauhan (Office Manager)

Monday to Friday between: - 2.30pm to 6.30pm,

Wednesday: - 11.00am to 1.00pm.

Bank Holidays – Closed - Tel. 0121 359 7727

E-mail- enquiries@arya-samaj.org

10 Principles of Arya Samaj

- 1. God is the primary source of all true knowledge and all that is known by its means.(At the beginning of creation, nearly 2 Billion years ago, God gave the knowledge of 4 Vedas to four learned Rishis named Agni, Vayu, Aditya and Angira. Four Vedas called Rig Ved, Yajur Ved, Sam Ved and Atharva Ved contain all true knowledge, spiritual and scientific, known to the world.)**
- 2. God is existent, intelligent and blissful. He is formless, omnipotent, just, merciful, unborn, infinite, invariable (unchangeable), having no beginning, matchless (unparalleled), the support of all, the master of all, omnipresent, omniscient, ever young (imperishable), immortal, fearless, eternal, holy and creator of universe. To him alone worship is due.**
- 3. Vedas are the scripture of all true knowledge. It is paramount duty of all Aryan to read them, teach and recite them to others.**
- 4. All human beings should always be ready to accept the truth and give up untruth.**
- 5. All our actions should be according to the principles of Dharma i.e. after differentiating right from wrong.**
- 6. The primary aim of Arya Samaj is to do good to the human beings of whole world i.e. to its physical, spiritual and social welfare.**
- 7. All human beings ought to be treated with love, justice and according to their merits as dictated by Dharma.**
- 8. We should all promote knowledge (Vidya) and dispel ignorance (Avidya).**
- 9. One should not be content with one's own welfare alone but should look for one's welfare in the welfare of all others.**
- 10. In matters which affect the well being of all people an individual should subordinate any personal rights that are in conflict with the wishes of the majority. In matters that affect him/her alone he/she is free to exercise his/her human rights.**

Meditation is Churning

यो वै ते विद्यादरणी याभ्यां निर्मथ्यते वसु । स विद्वाञ्ज्येष्ठं मन्येत स विद्याद्
ब्राह्मणं महत् ॥ अथर्ववेद १०.०८.२०

Yo vai te vidyadarni yabhyam nirmathyate vasu I sa vidvan
jyestham manyeta sa vidyad brahmanam mahat II

Atharva Veda 10.8.20

Meaning in Text Order

Yah = who so

Vai = verily

Te = those

Vidyat = knows

Arni = fire producing churning sticks

Yabhyam = with which

Nirmathyate = churned out

Vasu = spiritual wealth

Sah = He

Vidvan = scholar

Jyeshtham = supreme

Manyeta = will be able to know

Sah = he

Vidyat = may be able to know

Brahmanam = the Lord

Mahat = great.

Meaning

The learned one who knows precisely the churning of sticks to kindle the fire where from supreme bliss is churned out. Bliss is churned out with the **Arnis** of the soul and Aum with the help of mind and intellect. That learned one will be able to know the supreme Lord

Contemplation

Before the invention of the match box, fire used to be created by rubbing two twigs with force.. Specifically for yajna this method was used to create sacred fire. These special wood sticks were known by the name of **uttraarni** (the upper stick) and **adharaarni** (the lower stick). This procedure was known as **agni manthan** or churning of fire. But in this mantra it is not the topic of fire churning, there is a description of churning of spiritual wealth. The sages have told us with their own experience that the **soul** is the lower fire stick and **Omkar** is the upper stick. **The meditation of Aum with the help of mind and intellect by the soul is called the churning of sticks.** That is the only method to realise God.

As the oil is hidden in sesame seeds, fire in wood and butter in milk,, a special procedure is needed to get oil, butter and fire, the same way as when the soul starts churning Aum then eternal bliss stars appearing.

The mantra mentions specifically that who knows the **arnis** which can bring forth the spiritual bliss that person only can know the supreme. That supreme's glory is sung in the Vedas who is the master of present, past and future and who is the embodiment of light and bliss. I salute that supreme.

The real knowledge of the Vedas is with that person who knows the means to realise God, not that person who has only memorised the mantras. That person is the true knower of the Vedas. Let us know the churning of **arnis**, realise the supreme Lord and attain spiritual bliss, and becoming worthy to be called knower of the Vedas.

By Mr Krishan Chopra

योग विद्या-४

आचार्य डॉ. उमेश यादव

पिछले अंक में हमने योग के आठ अंगों में से पहला अंग यम के बारे में जाना । यम क्या है और यम का क्या लाभ है । सत्य, अहिंसा, चोरी नहीं करना, ब्रह्मचर्य का पालन करना व अपरिग्रह अर्थात् अनावश्यक वस्तुओं का सर्वथा त्याग; ये सब समझा । आज हम नियम के लाभों का विचार करते हैं । महर्षि पतंजलि ने नियम के भेद व उनके वर्तने से होने वाले लाभों का वर्णन इस प्रकार से किया है ।

शौचसंतोषतपःस्वाध्यायेश्वरप्रणिधानानि नियमाः । योग.द. २/३२

नियम के भी पाँच भेद बतलाये गये हैं- शौच, संतोष, तप, स्वाध्याय और ईश्वर-प्रणिधान

१. शौच- शौचात्स्वाङ्गजुगुप्सा परैरसंसर्गः । योग द. २/४०

इस योग सूत्र के अनुसार हम यह समझ पाते हैं कि शुद्धि करने से हमें अंग/गुप्तांग शरीर के सब हिस्सों का ज्ञान हो जाता है । बार-बार इनके स्पर्श से अपने ही अंगों से हमें घृणा होने लगती है । इन्हें बार-बार छूने की ईच्छा भी नहीं होती । वस्तुतः योगी वाह्य शरीर की नश्वरता से परिचित होता हुआ गन्दगी में पड़ने की ईच्छा नहीं रखता । वह यह समझता है कि कितने बार भी इसे साफ करो, यह तो फिर भी गन्दा होते ही रहेगा । यह शरीर तो मल-मूत्र से भरा हुआ है । ऐसा भान होने पर उसके अन्दर “परैः असंसर्ग” अर्थात् दूसरों के शरीर को छूने की भी ईच्छा नहीं करता । इस प्रकार अपने अंग या दूसरों के अंग सब योगियों के लिये गन्दगी का भरा शरीर ही दिखता है और इस प्रकार उसे नश्वर शरीर से घृणा होने लगती है जो उसे वैराग्य की ओर मोड़ देता है । आगे इसका

स्पष्टीकरण इस प्रकार किया जाता है ।

सत्त्वशुद्धिसौमनस्यैकाग्रयेन्द्रियजयात्मदर्शनयोगत्वानि च । योग द. २/४१
शौच अर्थात् वाह्य शुद्धि के बार-बार सम्बन्ध होने से योगी के अन्दर
अन्तःशुद्धि की ओर बढ़ने की प्रेरणा जगती है । वह है- सत्त्व शुद्धि, मन की
प्रसन्नता व एकाग्रता, इन्द्रिय-जय अर्थात् इन्द्रियों पर विजय पाना व फिर
आत्म दर्शन करना अपनी आत्मा को जानना और तब परमात्मा को जानने
की ईच्छा जाग जाती है । मन-वुद्धि-चित्-अहंकार ये चार अन्तःकरण
कहलाते हैं । इनकी शुद्धि का खयाल किया जाये तो निश्चय ही मनुष्य
अध्यात्म की ओर आगे बढ़ेगा । इससे हमें यह भी नहीं समझना है कि
शरीर के वाह्य अंगों की शुद्धि नहीं करनी है । इनकी शुद्धि तो करनी है
तभी तो अधिकाधिक शरीर स्वस्थ रहेगा पर इनसे हमें सत्यता की समझ
लेनी है कि वाह्य शरीरांग तो नश्वर है, इसी में केवल लगे रहोगे तो
जीवन का कल्याण नहीं है । हमें इससे आगे भी जाना है । ऐसा भाव आने
पर ही कोई मनुष्य सत्त्व=वुद्धि, मन, चित् व इन्द्रियों की शुद्धि का विचार
कर आत्मा की पहचान तक बढ़ता है और भौतिकता से ऊपर उठकर
परमात्मा से मिलने की अर्थात् आध्यात्मिक जीवन जो सत्य जीवन है, उसे
ही जीने की तीव्र ईच्छा जागृत हो जाती है । बुद्धि की शुद्धता से ज्ञान की
शुद्धता, फिर कर्म की शुद्धता तब जीवन का उत्कर्ष अर्थात् परमात्मा से
मिलन होगा ।

इस संसार में जो मनुष्य भौतिक व आध्यात्मिक जीवन संतुलित करके
चलता है वही ईश्वर को जानता है । केवल भौतिकता में फंसे रहकर जीवन
समाप्त कर देना तो आधा जीवन जीना हुआ पूरा तब होगा जब जीवन में
आध्यात्मिकता आयेगी । तभी तो जीवन का ४ महत्त्वपूर्ण उद्देश्य समस्त

वैदिक ग्रन्थों में बतलाया गया जो धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष है । जहाँ अर्थ व काम भौतिकता को सिद्ध करते हैं, वहीं धर्म व मोक्ष आध्यात्मिकता को सिद्ध करते हैं । पर चारों अन्योन्याश्रय सम्बन्ध रखते हैं अर्थात् सब एक-दूसरे से जुड़े हुये हैं । धर्मपूर्वक अर्थोपार्जन, धर्म व अर्थ पूर्वक काम की पूर्ति तथा धर्म, अर्थ व काम के सद् प्रयोग से मोक्ष की प्राप्ति । यह है इनका पारस्परिक सम्बन्ध ।

२. संतोष- संतोषादनुत्तमसुखलाभः । योग. द. २/४२

संतोष से साधक को अनुत्तमसुखलाभ अर्थात् सर्वोत्तम सुखों की प्राप्ति होती है । यहाँ वैदिक प्रयोग है- उत्तम ही नहीं अपितु सर्वोत्तम इसे ही यहाँ “अनुत्तम” कहा गया है । संतोषी व्यक्ति अपने जीवन में कभी घबराता नहीं बल्कि पुरुषार्थ करता हुआ शनैः शनैः आगे बढ़ता जाता है और परमेश्वर की न्यायव्यस्था पर पूर्ण विश्वास रख निर्वाधगति से निश्चिन्त्य अपने गन्तव्य की ओर चलता रहता है । किसी ने ठीक ही कहा है - “संतोष जीवन की सर्वोत्तम धरोहर है” । सांसारिक भोगों की ईच्छा भंग होने लगती है और मन में शांति की वृद्धि स्वाभाविक ही होने लगती है ।

३. तप- कायेन्द्रियसिद्धिरशुद्धिक्षयात् तपसः । योग द. २/४३

काया-इन्द्रिय-सिद्धिः= शरीर तथा इन्द्रियों की सिद्धि अर्थात् स्वस्थता होने से अशुद्धिक्षयात्-अशुद्धि का क्षय होता है; तपसः अर्थात् तप के अनुष्ठान से । तपस्या द्वन्द्व सहन को कहते हैं । सुख-दुःख, उतार-चढ़ाव, हानि-लाभ, हार-जीत आदि द्वन्द्व कहलते हैं । ऐसे द्वन्द्व स्थिति को जो

संतुलनपूर्वक सहन करता है वह शरीर, इन्द्रिय, मन आदि से बलवान हो जाता है और वह जीवन की हर अवस्था में प्रसन्न व संतुलित हो सुखात्मक अनुभूतियों में जीता है । यही तप का लाभ है ।

४. स्वाध्याय- स्वाध्यायादिष्टदेवतासम्प्रयोगः । योग.द. २/४४

स्वाध्यायात्- स्वध्याय से, इष्टदेवतासंप्रयोगः- ईश्वर के साथ सम्बन्ध बन जाता है । इष्टदेवता यहाँ ईश्वर के लिये ही प्रयुक्त है । योगी/साधक/उपासक के किये इष्टदेवता परमसामर्थ्यवान्, सच्चिदानन्दस्वरूप, सर्वव्यापक ईश्वर का सम्यग् ज्ञान कर उससे सम्प्रयोग अर्थात् मजबूत सम्बन्ध बना लेना सहज हो जाता है । स्मरण हो कि स्वाध्याय शब्द हमें स्व+ अध्याय अर्थात् स्वयं को भी पढ़ने का संकेत करता है । सब सद् ग्रन्थों के सम्यग् अध्ययन, स्वयं के चिन्तन-मनन तथा ऋषियों के समुचित मार्गदर्शन से ही सत्य ईश्वर का ज्ञान हो सकता है । अतः स्वध्याय शब्द अपने आप में व्यापक अर्थ सिमटे हुये है ।

५. ईश्वरप्रणिधान- समाधिसिद्धिरीश्वरप्रणिधानात् । योग.द.२/४४

ईश्वर-प्रणिधान से समाधि की सिद्धि अर्थात् ईश्वर का सानिध्य/मिलना प्राप्त होता है । ईश्वर को अपने अन्दर-बाहर उपस्थित मानकर और ऐसा समझकर कि वह हमें सदैव अपने अनन्त ज्ञान से जान रहा है, ज्ञानचक्षु से देख रहा है और दिव्य कर्ण/डिवाइन इयर से सुन रहा है, जो कोई कर्म करता है वही सच्चा ईश्वर विश्वासी होता है और वही सच्चे ईश्वर के दिव्य दर्शन कर सकने में समर्थ होता है । यही ईश्वरप्रणिधान है-योगद. २/३२-द्रष्टव्य । समाधि दो प्रकार की मान्य है । सम्प्रज्ञात व असम्प्रज्ञात । इनकी अवस्थाओं का वर्णन समाधि प्रकरण में करेंगे ।

५. गाओ मोरे मनवा, प्रभु जी का गीत रे

गाओ मोरे मनवा, प्रभु जी का गीत रे ।
होना न मोरे मन, कभी भयभीत रे ॥

सर्वव्यापक, सर्वनियन्ता, सर्वशक्तिमान्,
निर्लेप होकर सबके अन्दर, वह ओ३म् विराजमान्,
सबको चलाये सबको घुमाये, है वही महान ॥ गाओ मोरे
मनवा..... ।

न्यायविधाता मंगलदाता, सबका जी हर्षाता,
पड़े पाप कर्म को कोई, उसको वह तड़पाता,
दया-न्याय से बाँध रहा है, सबको वही सुजान ॥ गाओ मोरे
मनवा..।

ब्रह्म वही है, वही है विष्णु, वही है शंकर स्वामी,
प्रजापति और विश्वकर्मा, वही है अन्तर्यामी,
उमेश-उपासित हृदयमन्दिर में, परम शाँति-सुख-धाम ॥ गाओ
मोरे मनवा...।

SANYAAS SACRAMENT **(15th SANSKAR)**

Sanyaas Sacrament is the last Sacrament in life of a human being. Normally a person aged 75 years is ready to enter hermitage of Sanyaas but there is no hard and fast rule about the age of Sanyaas Sacrament. After gaining general true knowledge and true knowledge about all kinds of Sciences during the Bramcharya Hermitage period a person can enter Sanyaas Sacrament whenever he/she feels detachment from worldly affairs. A Brahmachari, a householder or a Vaanprasthi person can take Sanyaas Sacrament if he/she definitely feels totally detached from worldly affairs. A Sanyaasi has to be totally detached from affection of his/her family members, totally free from any infatuation and free from any partiality towards any other individual. A person should have acquired true knowledge of all four Vedas and Aarsh Granth before entering Sanyaas Ashram (hermitage).

The main duties of a Sanyaasi is to roam around the world and teach the true knowledge of Vedas and Aarsh books and to do good things to all human beings. A Vaanprasthi person lives a dedicated life in a jungle while a Sanyaasi roams around the world and fulfils his/her duties while living a life dedicated to the well being of all human beings and animals on earth. To do good to the world is duty of a Vaanprasthi as well as a Sanyaasi. But a Vaanprasthi person lives in his/her own house and carries out his/her duties while a Sanyaasi person has no fixed abode and carries out his/her duties wherever he/she reaches at a time in the world. A Sanyaasi lives his/her life at the mercy of a community taking care of his/her necessities of life like food and shelter etc. Thus the life of a Sanyaasi is very difficult to live. This is why it is very important for a sanyaasi to be a learned and wise person so that he/she can show the world the correct path and gain the due respect from the

members of that community. A person can not be a true Sanyaasi just by wearing a saffron coloured robe.

Asceticism, devout austerity, abandonment, regular study and true worship of Almighty God as described in four Vedas are important ingredients for Vaanprasthi and Sanyaasi.

In Sanskaar Vidhi Maharishi Dayanand Saraswati has written the definition of a Sanyaasi as following.

“Samyagya Nyasyantyardharmaachararaani Yena Vaa Samyagya Nityam Satyakarmasvaasta Upvishati Sthiri Bhavati Yen Sa Sanyaasah. Sanyaaso Vidyate Yasya Sanyaasi”.

Meaning: An act which is totally free of immorality, sin or unrighteousness and totally full of virtuous and truthful deed or actions and becomes firmly established is called as an act of Sanyaas. A person with qualities and virtues of Sanyaas is known as sanyaasi.

Please refer to Sanyaas section of Sansakaar Vidhi of Maharishi Dayanand saraswati.

Duties and temperament of a Sanyaasi- There is no time to rest in any of four Aashrams. Like other Aashrams (hermitage) Sanyaas Aashram also demands asceticism and hard work. The only difference that people in Brahmachrya, Grihastha and Vaanprastha Aashram have some degree of self interest in them but A Sanyaasi is totally free from any kind of self interest and lives his/her life in service of others. To attain salvation becomes the main aim of a Sanyaasi. A Sanyaasi is not afraid of his/her death. A Sanyaasi is always ready to die happily. A Sanyaasi is free from all kinds of attachment to this world and lives his/her life to do good to the world. This is the reason for achievement of Salvation by a true Sanyaasi. A Sanyaasi is full of happiness and satisfaction in his/her

life. A Sanyaasi is free from any attachment, addiction or bad habits and roams around in the world giving scientific knowledge and teaching of Vedas to other human beings. While carrying out these duties a Sanyaasi is gradually coming nearer to Almighty God. This is the true character of a Sanyaasi ie not to harm a living creature, not to be afraid of condemnation, criticism or insult/disgrace, always follow Dharma and live accordingly. A Sanyaasi should not favour any one, be kind and polite person to others, wear clothes which are prescribed in Aarsh Granth, obey the rules of society wherever he/she is staying for the time being, to have the scalp hair, moustache and beard shaved and nails trimmed. These are the general personal rules for a Sanyaasi to live his/her life. Some Sanyaasi grow long scalp hair, beard and moustache to show to the outside world. These are for show only and do not represent the real attributes and quality of a Sanyaasi. A red ochre (Gerua colour) coloured dress of a Sanyaasi represents the selfless, benevolent, impartial and honest nature and attributes of a true Sanyaasi. The colour of a pure fire is also red ochre (Gerua). A Sanyaasi carries a walking stick with him/her which helps to stay safe from dangerous animals and bad human beings like a thief or a robber or a rowdy person.

A Sanyaasi must live his/her life according to Dharm as written in Vedas and Aarsh Granth. He/she should be one in his/her thought, speech and actions (deed). A Sanyaasi should always preach about austerity, renunciation, regular study of Vedas and Aarsh books and do good for the human kind and animals and follow his/her preachings in her/his own life. Only these things will make this world a better place to live.

As we have said before that A Sanyaasi has to be well educated and wise, living a life of a good human being and free from any worldly attachment or desire. Only then such a true Sanyaasi can do good things for the world as a whole otherwise he/she will be a burden for a society, country and earth planet. Now a days we do

see some human beings run away from their responsibilities of a son/daughter, husband/wife, father/mother and their duties for the community and start wearing Gerua clothes and pretend to be a Sanyaasi. These characters grow long scalp hair, long beard and moustache, use all kind of intoxicating drugs prepared from the flowers of hemp plant (Ganja and Charas) Cannabis and Marijuana and make a group and roam around in communities. These people take undue advantage of ignorant and innocent human beings and rob them of their money and properties. These kind of fake Sanyaasi are curse to the society, country and mother earth planet. In words of Maharishi Dayanand Saraswati these illiterate, run away and men/women of bad character can never be a true Sanyaasi just by wearing clothes of a Sanyaasi. Vedic Dharam will never accept these kind of fake Sanyaasi. - Manusmriti 6/52 as written in Maharishi Dayanand's Sansakaar Vidhi book.

A Sanyaasi, by nature, should be brave and should think of honour bestowed on him as a poison.

A true Sanyaasi should not be afraid of insult and disgrace but live his/her life according to Dharma.

A Sanyaasi should be totally detached from profit and loss of any kind, respect and disgrace/insult, death, attachment and love, and any kind of animosity with anyone. A true Sanyaasi should not be concerned about his/her own comforts and discomforts. A true Sanyaasi should fulfil his/her duties as written above. A person who fulfils all the above creation should go through Sanyaas Sacrament otherwise not.

Written by
Acharya ji Dr Umesh Yadav in Hindi
And
Translated by
Dr Narendra Kumar in English

Matrimonial Service

Arya Samaj (Vedic Mission) West Midlands is dedicated to its matrimonial members to provide a service that will help members find a partner for marriage within our community. We feel it is time to make a few changes to help with this process and move forward with the times.

Changes we have made in 2018:

Website:-

- A new data base on the website that will give members an option to add a **photo** if they wish and a space for members to write a **bio** about themselves and what they are looking for in a partner.
- Existing members would have received a letter with information about what we need from you to update your profile. Once you have received this letter please fill it out and send back to us soon as possible, so we can update our **NEW** data base and you can start using the new system.

Matrimonial Service:-

- Members will now be given the **option** to directly contact each other or have the **option** for parents to contact each other.
- All **new** members will be contacted by the office staff for phone conversation during the application process.
- We are also looking in to ways of making our Matrimonial events more successful.
- **Now on facebook -**
<https://www.facebook.com/aryasamajwestmidlands/>

List of Festivals for year 2018

Festival	Actual Date of Festival	Date for celebration in Arya Samaj
Makkar Sankranti	Sunday 14 th January	Sunday 14 th January
Republic Day of India	Friday 26 th January	Sunday 28 th January
Rishi Bodh Utsav.	Tuesday 13 th February	Sunday 18 th February
Holi	Friday 2 nd March	Sunday 4 th March
Ram Navmi	Sunday 25 th March	Sunday 25 th March
Arya Samaj Foundation Day	Saturday 7 th April	Sunday 29 th April
Vedic Vivah Mela	n/a	TBC
Annual General Meeting.	n/a	Sunday 29 th July
Independence Day of India	Wednesday 15 th August	Sunday 19 th August
Ved Katha (8 days)	n/a	Sunday 26 th August to Sunday 2 nd September
Raksha Bandhan	Sunday 26 th August	Sunday 26 th August
Shri Krishna Janmasthanmi	Monday 3 rd September	Sunday 2 nd September
Special Satsang for University Students	n/a	Sunday 9 th September
Gayatri Maha Yajna	n/a	Sunday 23 rd September
Vedic Vivah Mela	n/a	TBC
Dasahahara	Friday 19 th October	Sunday 21 st October
Diwali	Wednesday 7 th November	Saturday 10 th November

News

Get Well Soon:

- This is to inform our members and readers that our Patron Shri Gopal Chandra MBE is recovering in Ryland View Nursing Home, Arnhem Way, Tipton, DY4 7HR and telephone number 0121 520 1577. We all wish him a speedy recovery.
- This is to inform our members and readers that Mr Vishwa Nath Bhandari, ex-Vice President of Arya Samaj West Midlands year 2001-2003 is recovering in Gracewell of Edgbaston Care Home, Speedwell Road, Edgbaston, Birmingham, B5 7PR and telephone number 0121 796 0796. We all wish him a speedy recovery.
- Mrs Deepika Datta is on waiting list for a kidney transplant. We wish her to get better soon.

Condolence:

- Acharya Dr. Umesh Yadav, Mrs. Shanti Yadav and family for loss of Mr. Vudh Lal Singh (95), father of Mrs. Shanti Yadav on 12th February 2018 in India (Bihar). May God grant the departed soul eternal peace and give strength to the family members to bear their loss.

Congratulations:

- Mrs. Ved Datta and family for the celebration of her 90th in Arya Samaj with Havan. Wishing Mrs Datta good health and happiness.

- **Mr. Dhirender and Mrs. Babeeta Verma for celebration Havan for their son Rohan 21st birthday. Wishing Rohan good health and happiness.**

Sponsors:

- **Dr. Amit Rastogi & family and Mrs. Anita Rastogi & family had havan and prayer at Arya Samaj-bhavan on 4th February 2018 in sweet memory of their mother Dr. Renu Rastogi on her 3rd death anniversary.**

Many congratulations to all the mentioned families who have had auspicious havan at their residences on different occasions or Sunday Vedic Satsangs in Arya Samaj Bhavan.

Donations to Arya Samaj West Midlands:

- | | |
|--|------|
| • Mrs. Ved Datta | £51 |
| • Mr. J.G Bector | £10 |
| • Dr. Amit Rastogi – with Rishi-Langar | £253 |
| • Mr. Prem Nanda | £20 |
| • Miss Charu Malhotra | £25 |

Donations to Arya Samaj West Midland through the Priest-Services:

- | | |
|-----------------------|-----|
| • Mr. Dhirender Verma | £51 |
|-----------------------|-----|

Thank you for all your Donations!

**Please contact Acharya Dr Umeh Yadav on
0121 359 7727
for more information on**

- **Member or non member wishing to be a Yajman in the Sunday congregation to celebrate an occasion or to remember a departed dear one.**
- **Have Havan, sankars, naming, munden, weddings and Ved Path etc performed at home.**
- **Our premises are licensed for the civil marriage ceremony.**
- **Please join in the Social group at Arya Samaj West Midlands every Wednesday from 11am. Emphasis is on keeping healthy and fit with yoga and Pranayam. Hot vegetarian Lunch is provided at 1pm.**
- **Ved Prachar by our learned Priest Dr Umesh Yadav on Radio XL 7 to 8 am, first Sunday of the month. 4th March 2018 & 1st April 2018.**

Every effort has been taken that information given is correct and complete. But if any mistake is spotted please inform the office.

0121 359 7727

**E-mail- enquiries@arya-samaj.org
Website: www.arya-samaj.org**

New Building Refurbishment Fund

Following people so far have donated to the Arya Samaj West Midlands New Building Refurbishment Fund at 321 Rookery Road, Handsworth, Birmingham, B21 9PR:

<u>NAME</u>	<u>DOANTION</u>
Mr Krishan Chopra & Dr Raksha Chopra	£5000.00
Dr Purushotam Das Gupta & Mrs Rekha Gupta	£2100.00
Mrs Shama Kumar & Dr Narendra Kumar	£2001.00
Dr Umesh Kathuria & Mrs Subash Kathuria	£2001.00
Mr Ravinder Renukunta	£2000.00
Mr Joginder Pal Sethi	£1100.00
Mr Balwant Kohli	£1100.00
Sangam Association UK	£1010.15
Mrs Sudarshan Arora	£1001.00
Mrs S Bhandari	£1000.00
Mr Paul Laroia	£1000.00
Mr Raghubir Berry	£1000.00
Dr Amit Rastogi & Mrs Anita Rastogi	£1000.00

Dr Rajiv Agrawal	£1000.00
Mrs Brij Bala Duggal Dr Anil Kapoor & Dr Rajiv Kapoor	£1000.00
Dr U L Udeshi	£1000.00
Mr Satya Prakash Gupta	£501.00
Dr Bhaskar Sharma	£501.00
Mr Ram Sarup Kohli	£500.00
Mr Krishan Kumar Sethi	£500.00
Mr Rajesh Salota	£500.00
Dr Harinder Mohan Verma & Mrs M Verma	£300.00
Mr N.K. Agrawal	£250.00
Mr Swaraj Kumar & Mrs Vijay Luxmi	£201.00
Mr Dharm Pall Sharma	£101.00
Mr Ashok Panday	£101.00
Anonymous	£101.00
Mr Ved Parkash Rawal	£100.00
Dr Satyavrat Sharma	£100.00
Mrs Janki Mehta	£100.00
Mrs K Spolia	£51.00
Mrs Santosh Banga	£51.00
Mr G.C. Sethi	£51.00
Mr Raj Joye	£51.00

Mrs R.K. Bassi	£50.00
Mrs Vibha Cale	£50.00
Mr Ram Dev Arora	£21.00
Mrs Sunita Rana	£21.00
Mr Baldev Lal Sharma	£21.00
Anonymous	£20.00
Mr Inderjit Marwah	£10.00

TOTAL SO FAR :

£28566.15

Thank you!

Haven't Donated Yet ????

Please try and make your donation in March 2018, as we need the money for work to be carried out on the new building soon as possible, but all donation after March will still be appreciated!

Arya Samaj (Vedic Mission) West Midlands

NEW HOME

Dear Members and Friends

Refurbishment work is almost complete. We will be moving to our new headquarter 321, Rookery Road, Handsworth, Birmingham, B21 9PR in the last week of March 2018.

The new building is in middle of our own community area and is located on main bus route with bus stop just opposite to our building.

The first Sunday congregation at our new home will be on Sunday 1st April 2018. We hope to see you all there. First Day Centre will be on Wednesday 4th April 2018

We are planning to run quite a few exciting projects in our new headquarter for example:

- **Parents and Toddlers group, Hindi and Sanskrit Language Classes**
- **Various arts related activities like classical Indian Dances, speech and drama and music.**
- **Up to date Library facilities**
- **Day Centre activities**
- **Spiritual talks by learned dignitaries**

The above projects are in addition to our every Sunday congregation.

To run these various facilities we need a good number of volunteers.

For those of you with urge of giving Nishkam Seva to Arya Samaj and our community this is your golden opportunity.

Please do not hesitate and come forward.

Your services will be highly appreciated irrespective of amount of time dedicated by you to your Arya Samaj.

Please get in touch with us either through email at enquiries@arya-samaj.org or Telephone us on 0121 359 7727.

PLEASE NOTE: Telephone number only active until 31.03.2018

Letter of Appeal for Donations to Arya Samaj (Vedic Mission) West Midlands

Sadar Namaste

I hope you are keeping well and in good spirits.

It gives me great pleasure to inform you that on 23rd August 2017 our Arya Samaj Society purchased Trinity Methodist Church, 321 Rookery Road, Handsworth, Birmingham, B21 9PR. This building is a replacement for 188, Inkerman Street building due to compulsory purchase order from Department for Transport for building High Speed Railways 2.

The Department for Transport (DFT) has paid us money to buy this church and are paying most of the money needed for refurbishment of this building like new gas central heating system, electric wiring, two bed room flat inside the building for resident priest, some kitchen work and flooring etc.

We still need more money for the work to be done **BUT NOT** financed by DFT for example:

- Interior painting and decorations of halls and rooms
- Sound systems for the main hall and middle hall
- Light fittings and LED bulbs for the whole building
- New carpets and furniture for the priest flat
- Some kitchen equipment, Refrigerator and freezers
- New tables and chairs for halls, library and offices
- Computers, Book shelves for library and offices, filing cabinets.
- Printing of a new Gayatri Mantra Calendar with new address of Arya Samaj

- Publication of English translations of Vedic Sanskar Vidhi (Vedic Sacraments Manual) and new Vedic Sandhya and Havan books for Sunday congregations

We need about **£100,000** fund to do all above necessary works.

We will honour those people who donate £1000 and above by putting their names on one of the walls of our building.

Donations can be made:

- **By cheque - Payable to 'Arya Samaj West Midlands' and sent back to us at 188 Inkerman Street, Nechells, Birmingham, B7 4SA**
- **Bank Transfer – The Co-operative Bank
Name of account – Arya Samaj
(Vedic Mission) West Midlands
Account number – 65839135
Sort Code – 08.92.99.**
- **Those of you who would like to pay in instalments please set up a standing order by requesting a form from our office.**

The money donated by you will help our present and future generations.

So please donate generously. No matter how small every donation will be appreciated.

Kind regards.

Yours sincerely

Dr. Narendra Kumar, Chairman

Dates for your Diary

(Festivals celebrated at Arya Samaj Bhavan)

Holi

Sunday 4th March 2018 - 11am – 1pm

188 Inkerman Street, Nechells, Birmingham, B7 4SA

Ram Navmi

Sunday 25th March 2018 - 11am-1pm

188 Inkerman Street, Nechells, Birmingham, B7 4SA

Arya Samaj Foundation Day

On Sunday 29th April 2018 at 11am our new Bhavan of Arya Samaj will be inaugurated by his Excellency Mr Y. K. Sinha, High Commissioner of India, London.

**We will celebrate this day in the presence of his Excellency at
321 Rookery Road, Handsworth, Birmingham, B21 9PR.**